IJAER/July-August 2024/Volume-13/Issue-4 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) Impact Factor:7.06

पश्चिमी उत्तर प्रदेश में राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, समायोजन एवं शैक्षिक आकांक्षा स्तर के सम्बन्धों का विश्लेषण

- राजन शर्मा, शोधकर्ता, ग्लोकल स्कूल ऑफ एजुकेशन, द ग्लोकल यूनिवर्सिटी, मिर्जापुर पोल, सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)
- डॉ0 पूनम लता मिड्ढ़ा , (प्रोफेसर), शोध निर्देशिका, ग्लोकल स्कूल ऑफ एजुकेशन, द ग्लोकल यूनिवर्सिटी मिर्जापुर पोल, सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)

सार–

देश में ही नही अपितु संसार के अनेक देशों में माध्यमिक शिक्षा बहुधा शिक्षा व्यवस्था की सबसे निर्बल कड़ी रही है। विभिन्न समितियों और आयोगों के गठन और उनकी संस्तुतियों के क्रियान्वयन की घोषणाओं के बाद भी माध्यमिक शिक्षा गतिहीन एवं अनेक समस्याओं से ग्रस्त रही है। वर्तमान में हो रहे सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक परिवर्ततनों के फलस्वरूप वर्तमान समय की माध्यमिक शिक्षा में गतिशीलता और परिवर्तशीलता लाना और भी अधिक प्रासंगिक एवं महत्वपूर्ण हो गया है। जिससे बदली हुई परिस्थितियों के साथ भावी नागरिकों को अधिक से अधिक संवेदनशील, उत्तरदायी एवं चरित्रवान बनने हेतु प्रेरित किया जा सके।

प्रस्तावना–

माध्यमिक स्तर की शिक्षा हमारी समुचित शिक्षा प्रणाली का एक महत्वपूर्ण अंग है। माध्यमिक शिक्षा को समृद्ध और सम–सामयिक बनाने के लिये देश में आजादी के बाद विशेष रूप से कई महत्वपूर्ण प्रयास भी किये गये हैं। वर्ष 1952–53 में माध्यमिक शिक्षा आयोग तथा 1964–66 में कोठारी आयोग की स्थापना से इस दिशा में ठोस कार्य की शुरूआत हुई। कोठारी आयोग की सिफारिश के आधार पर देश की पहली राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1968 तैयार की गई। आयोग द्वारा ऐसे बहुउद्देशीय विद्यालयों की स्थापना की संस्तुति भी की गई जो माध्यमिक स्तर पर प्राद्योगिकी, वाणिज्य, ललितकलाओं और गृह विज्ञान आदि में अधिक पाठ्यक्रम उपलब्ध करा सकें। यदि माध्यमिक शिक्षा व्यवस्था को विशेष रूप से सोचें तो लगता है कि माध्यमिक शिक्षा की स्थिति वास्तव में और भी अधिक दयनीय है दूसरे शब्दों में माध्यमिक शिक्षा वर्ममान में अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रही प्रतीत होती है आज उसके समक्ष ऐसी अनेक चुनौतियां हैं जिनका मुकाबला किये बिना वह अपने लक्ष्य तक पहुॅच पाने में सफल भी नही हो सकती। इन चुनौतियों में सबसे अहम् चुनौती माध्यमिक शिक्षा का दोषपूर्ण पाठ्यक्रम है। उसकी उद्देश्यहीनता और सैद्धान्तिक प्रवृत्ति इसे अनेक प्रकार की समस्याओं के भंवर जाल में फॅसा रही है। विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता और अराजकता की बढ़ती स्थिति का मुख्य कारण यह भी रहा है। इसके अतिरिक्त उसकी दोषपूर्ण परीक्षा प्रणाली, सरकार द्वारा माध्यमिक शिक्षा को प्राथमिक या उच्च शिक्षा के विपरीत इसे कम महत्व देते हुए वित्तीय संसाधनों के आंवटन में भेद–भाव, गैर सरकारी विद्यालयों की संख्या में असंतुलित वृद्वि और उन पर नियंत्रण का अभाव, माध्यमिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में एकरूपता का अभाव या दोहरी शिक्षा प्रणाली आदि अन्य मुख्य चुनौतियां हैं। इन चुनौतियों का सामना और समस्याओं का निराकरण वर्तमान हालातों में यद्यपि काफी मुश्किल कार्य है लेकिन असंभव भी नहीं है। अतः इस दिशा में सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाते हुए यदि कुछ सुधारात्मक कदम उठाये जायें तो निश्चित रूप से माध्यमिक शिक्षा की स्थिति और गुणवत्ता में अपेक्षित परिवर्तन आ सकेगा।

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा–

दूरस्थ शिक्षा का सामान्य अर्थ है, दूर रहकर दी जाने वाली शिक्षा, अर्थात् ऐसी शिक्षा व्यवस्था जिसमें छात्र और अध्यापक के बीच भौतिक दूरी बनी रहती है। ऐसी शिक्षा व्यवस्था जिसमें छात्र (सीखने वाले) का अध्यापक (सिखाने वाले) से सीधा सम्पर्क परम्परागत शिक्षा की भाँति नहीं हो पाता, बल्कि सीखने वाला अपने घर पर रहते हुए बिना विद्यालय गये हुए ही शिक्षा ग्रहण करता है, अर्थात् परम्परागत शिक्षा में प्रयुक्त आवश्यक नियमों व शर्तों में शिथिलता के साथ दी जाने वाली शिक्षा ही मुक्त या दूरस्थ शिक्षा कहलाती है। इसमें सीखने वाले (बालक एवं बालिकाएँ) प्रवेश–परीक्षा, विषय–चयन, निश्चित व निर्धारित समय–सारणी, विद्यालयी परिसीमा, परीक्षा की कठोरता आदि बंधनों में शिथिलता पाकर अपनी स्वेच्छा से विषय चयन करके अपनी सीमा, रुचि व गति के अनुसार पढ़ाई करते हैं। इस शिक्षा व्यवस्था में छात्रों को पढ़ने के लिए स्वमुद्रण सामग्री, ऑडियो कैसेट्स, ऑडियो–विडियो कैसेट्स, रेडियो, टेलीविजन, कम्प्यूटर व सीडी आदि के साधन उपलब्ध हैं। इस शिक्षा पद्धति को निम्नलिखित और भी नामों से जाना जाता है–(क) पत्राचार शिक्षा, (ख) मुक्त शिक्षा (ग) आजीवन शिक्षा, (घ) स्वतंत्र शिक्षा, (ङ) ई–लर्निंग, (च) मोबाइल लर्निंग, (छ) वर्चुअल शिक्षा तथा (ज) मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम प्रणाली।

(क) पत्राचार शिक्षा : पत्राचार शिक्षा, दूरस्थ शिक्षा पद्धति का प्रथम सोपान है। इस शिक्षा व्यवस्था में विद्यार्थी अध्ययन केन्द्र से दूर रहने के कारण विद्यालयी सम्पर्क में नहीं रह पाता। इसी विद्यालयी सम्पर्क के लिए वह डाक व्यवस्था की सहायता लेता है, इसमें पत्र के माध्यम से विद्यालय के सम्पर्क में बना रहता है। आवेदन फार्म, परिचय पत्र, मुद्रित सामग्री, प्रवेश पत्र, अंक–पत्र इत्यादि सभी का आदान–प्रदान डाक के माध्यम से होता है। इस पद्धति में विद्यार्थी को डाक की अव्यवस्था के कारण अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना भी करना पड़ता है।

(ख) मुक्त शिक्षा : मुक्त शिक्षा, दूरस्थ शिक्षा पद्धति का द्वितीय सोपान है। मुक्त शिक्षा का अर्थ है खुली या परम्परावादी शिक्षा व्यवस्था के नियम निर्देशों से मुक्त शिक्षा व्यवस्था। इससे विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में मनोनुकूल सहायता मिलती है। इस शिक्षा व्यवस्था में बालक को अध्ययन केन्द्र पर आने की बाध्यता नहीं रहती बल्कि परीक्षा केन्द्र पर परीक्षा देकर प्रमाण पत्र प्राप्त कर सकता है।

(ग) आजीवन शिक्षा : यह शिक्षा, दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था का तृतीय एवं विकासशील सोपान है। इसमें ऐसे लोग जो जीवनपर्यन्त शिक्षा से जुड़े रहना चाहते हैं, वे किसी भी पाठ्यक्रम में प्रवेश लेकर शिक्षा ग्रहण करते रहते हैं। दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था में आयु सीमा की बाध्यता न होने के कारण इसे आजीवन शिक्षा कहते हैं इसमें व्यक्ति सेवानिवृत्ति के उपरांत भी पढ़ाई कर सकता है।

(घ) स्वतंत्र शिक्षा : यह शिक्षा, दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था की महत्वपूर्ण अवस्था है। इसमें विद्यार्थी अपनी आवश्यकता, रुचि और सीखने की गति के अनुरूप बिना विद्यालय गये ही शिक्षा ग्रहण कर सकता है। इस शिक्षा व्यवस्था के अन्तर्गत एक साथ एक से अधिक पाठ्यक्रम में प्रवेश लेकर पढ़ाई कर सकता है साथ ही परीक्षा के लिए भी स्वतंत्र है, अर्थात् जब उसका विषय परीक्षा के दृष्टिकोण से तैयार हो जाय तब परीक्षा दे सकता है। अपनी आवश्यकता तथा रुचि के अनुसार विषय का चयन तथा परिवर्तन भी कर सकता है। यदि एक ही विषय के अलग–अलग प्रश्नपत्रों की परीक्षा हेतु अलग–अलग परीक्षाओं में सम्मिलित होना चाहे तो अलग–अलग परीक्षाओं में भी सम्मिलित हो सकता है।

(ङ) ई–लर्निंग : दूरस्थ शिक्षा पद्धति की यह आधुनिक तकनीकी से युक्त शिक्षा व्यवस्था है। इसमें विद्यार्थियों को डाक व्यवस्था में होने वाली समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ता, बल्कि कम्प्यूटर व इण्टरनेट के माध्यम से विद्यार्थी अपने से सम्बन्धित सूचनाओं को शीघ्रातिशीघ्र प्राप्त करके लाभान्वित होते हैं। डाक से मिलने वाली मुद्रित सामग्री के लिए प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं होती बल्कि अपने विषय से सम्बन्धित

विषय–वस्तु को इण्टरनेट के माध्यम से सुविधानुसार एवं आवश्यकतानुसार प्राप्त करके पढ़ाई करते हैं।

(च) मोबाइल लर्निंग : यह शिक्षा व्यवस्था भी ई–लर्निंग की भांति आधुनिक तकनीकों पर आधारित है। इसमें विद्यार्थियों को अधिक परेशान नहीं होना पड़ता। एक विषय वस्तु या सम्बन्धित सूचनाओं को एक विद्यार्थी एक से अधिक स्थानों पर एक ही समय में प्राप्त कर सकता है। इसमें एक स्थान पर बैठा एक विद्यार्थी सम्बन्धित सूचनाओं या पाठ्य विषय–वस्तुओं को इण्टरनेट के माध्यम से आसानी से किसी दूसरे स्थान/शहर में बैठे दूसरे व्यक्ति या एक से अधिक व्यक्तियों को एक साथ भेजकर कम समय व खर्च में अधिक लाभ प्राप्त कर सकता है।

(छ) वर्चुअल शिक्षा : यह शिक्षा व्यवस्था दूरस्थ शिक्षा की आधुनिकतम शिक्षा व्यवस्था है। इसमें विद्यार्थी को सम्पर्क शिक्षा के दौरान अध्ययन केन्द्रों पर परामर्शदाताओं या शिक्षकों की कमी अथवा गुणवत्तापूर्ण शिक्षण के अभाव सम्बन्धी दोषों को दूर करने का अवसर मिल जाता है। इसमें एक अध्यापक एक समय में एक से अधिक (अनेक) स्थानों पर स्थित कक्षाओं में बैठे विद्यार्थियों को एक साथ श्रव्य–दृश्य तकनीक के द्वारा पढ़ाता है। इसमें विद्यार्थियों को यह सुविधा रहती है कि उन्हें अपनी सुविधानुसार पास के अध्ययन केन्द्र पर ही दूर के कुशल अध्यापक का गुणवत्तापूर्ण शिक्षण प्राप्त हो जाता है जिससे विद्यार्थी अपनी उपलब्धि को आसानी से बढ़ा लेता है साथ ही विषय–वस्तु आसानी से समझ में आ जाती है और सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान भी भलीभांति हो जाता है।

शैक्षिक उपलब्धि–

जब से शिक्षा के क्षेत्र में वैयक्तिक विभिन्नता के विचार को महत्वपूर्ण स्थान मिला है तब से यह बात आवश्यक समझी जाने लगी है कि बालकों की वैयक्तिक विशेषताओं, उनके द्वारा अर्जित ज्ञान इत्यादि के आधार पर उनके लिए वर्तमान तथा भविष्य के लिए शिक्षा के व्यवस्था की जाय। शैक्षिक उपलब्धि आधुनिकीकरण की प्रक्रिया से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित है। यह देखा गया है कि उच्च उपलब्धि वाले अधिक आधुनिक तथा बुद्धिमान होते हैं। यह भी देखा गया है कि उच्च उपलब्धि वाले अपेक्षाकृत खुले दिमाग के होते हैं तथा सामाजिक एवं अन्य क्रियाकलापों में सबसे आगे पाये जाते हैं।

शिक्षा में यह एक बहुत जटिल और विरोधात्मक पहलू है कि शैक्षिक उपलब्धि में विभिनताएँ क्या है तथा उन विभिन्नताओं के पीछे कारण क्या है? पूरे विश्व के शिक्षाशास्त्री शैक्षिक उपलब्धि की समस्या के विषय में विचार और अध्ययन कर रहे हैं। अनेक बातें जैसे–विद्यार्थियों की जनसंख्या में वृद्धि, विद्यार्थियों की विद्यमान क्षमता के अनुसार उन्हें सहायता और पहचान देने के लिए प्रशिक्षण सम्बन्धी जो प्रोग्राम बनाए जाते हैं, अनुपलब्धि की समस्या, परीक्षा के विभिन्न स्तरों पर असफल होने वालों की बढ़ती हुई संख्या ने शिक्षाशास्त्रियों के सामने बहुत बड़ी समस्या खड़ी कर दी है। शिक्षा का लक्ष्य या उद्देश्य जो कुछ भी हो, शैक्षिक उपलब्धि निःसन्देह ही इसका बहुत बड़ा पक्ष है। निश्चित रूप से शैक्षिक उपलब्धि का बहुत महत्व है। विशेषकर वर्तमान के सामाजिक आर्थिक और सांस्कृतिक सन्दर्भ में। स्पष्ट रूप से स्कूलों में औपचारिक शिक्षा की सही शुरूआत शैक्षिक उपलब्धि पर महत्वपूर्ण असर डालता है।

समायोजन–

समायोजन एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक परिवर्त्य है। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में अनेक समस्याएँ उत्पन्न होती रहती हैं। ये व्यक्ति के बाह्य और आन्तरिक वातावरण के कारण होती है। इन समस्याओं का समाधान व्यक्ति के विकास या प्रगति के लिए आवश्यक है। इन सबसे बचने के लिए व्यक्ति को कुछ विशेष प्रयास करने पड़ते हैं। इन प्रयत्नों को ही समायोजन कहा जाता है।

शैक्षिक आकांक्षा स्तर–

बालक के संज्ञानात्मक विकास के साथ–साथ उसमें जिज्ञासाओं का उदय होता है। वह अपने जीवन

में आने वाली समस्याओं का समाधान करने के लिए धीर–धीरे मस्तिष्क का उपयोग करने लगता है। उसके मन में इन समस्याओं के प्रति अनेक विचार आने लगते हैं जिनसे आकांक्षाओं का निर्माण होता है ये आकाक्षांए शिक्षा द्वारा पुष्ट होती हैं। और शैक्षिक आकांक्षा के बादल जाती है। इन्हीं शैक्षिक आकांक्षाओं पर जीवन की योजनाएं निर्भर है। अतः शैक्षिक आकांक्षा का व्यक्तित्व के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान है। शैक्षिक आकांक्षा को इस प्रकार परिभाषित कर सकते है– ''शिक्षा के विषय में जानना, जानने की इच्छा रखना, शिक्षा के स्वरूप को समझना तथा उसके प्रति रूचि, अभिवृत्ति और शिक्षा प्राप्त करने की इच्छा ही शैक्षिक आकांक्षा है।''

अध्ययन के उद्देश्य :

- राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
- राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान के छात्र–छात्राओं के समायोजन का अध्ययन करना।
- राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर का अध्ययन करना।
- राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर का तुलना करना।
- राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा स्तर का तुलना करना।
- राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान के छात्र–छात्राओं के समायोजन की तुलना करना।
- राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के समायोजन की तुलना करना।
- राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना करना।
- राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना करना।

शोध परिकल्पना :

- राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर है।
- राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान के छात्र–छात्राओं के समायोजन में सार्थक अन्तर है।
- राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अन्तर है।
- राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।
- राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।
- अध्ययन केन्द्र की स्थिति के सन्दर्भ में राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, समायोजन एवं शैक्षिक आकांक्षा स्तर में सार्थक सहसम्बन्ध है।
- लिंग के सन्दर्भ में राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, समायोजन एवं शैक्षिक आकांक्षा स्तर में सार्थक सहसम्बन्ध है।
- जाति के सन्दर्भ में राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, समायोजन एवं शैक्षिक आकांक्षा स्तर में सार्थक सहसम्बन्ध है।

निष्कर्ष–

भविष्य में शोधकार्य के लिए शोधकर्ता का निर्धारण सूर्य के प्रकाश को दीपक दिखाने के समान होगा क्योंकि शोध प्रविधियों में उत्तरोत्तर विकास चल रहा है ज्ञान के अनेक क्षेत्र प्रस्फुटित हो रहे हैं ऐसी स्थिति में जो

शोधार्थी अपने विषय से सम्बन्धित पर्याप्त जानकारी रखते है उनके लिए शोध की अनेक दशाएं व दिशाएं स्वतः खुली प्रतीत होती हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

- **शर्मा संतोष (2000).** माध्यमिक स्तर पर सूचना एवं संचार तकनीकी, भारतीय आधुनिक शिक्षा, एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली, वर्ष 19, अंक 2।
- **शर्मा लालशा एवं वर्मा (2000).** शरत उच्च माध्यमिक स्तर पर एकल एवं संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर, शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन, भारतीय आधुनिक शिक्षा, एन0सी0ई0आर0टी0,नईदिल्ली,वर्ष 19, अंक 2।
- **शर्मा, धीरेन्द्र कुमार (1999).** अनुसूचित जाति एवं सामान्य जाति के विद्यार्थियों की मनोकाक्षाओं का तुलनात्मक अध्ययन भारतीय आधुनिक शिक्षा, एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली, वर्ष 14, अंक 11।
- **कौशल, एस० (2002).** फन्क्सनिंग ऑफ डिस्टेंस एजूकेशन इन्स्टीट्यूशन्स इन देलही. अनपब्लिश्ड डॉक्टरल थेसिस, डिपार्टमेंट ऑफ एजूकेशन, यूर्निवर्सिटी ऑफ देलही, देलहीं
- **मुछाल, महेश कुमार (2001).** राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय की कक्षा 10 के स्तर पर सामान्य विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान में अनुदेशन व्यूह रचनाओं की उपलब्धि के सन्दर्भ में प्रभाविकता. अप्रकाशित पी–एच०डी० शिक्षा शोध ग्रन्थ, शिक्षा संस्थान, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर.
- **सिंह, मंजुषा (1995).** औपचारिक एवं दूरस्थ माध्यम से शिक्षा ग्रहण करने वाले विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बंधी आदतों एवं शैक्षिक उपलब्धि : एक तुलनात्मक अध्ययन, एम0एड0 लघु शोध ग्रन्थ, दयाल बाग शिक्षण संस्थान, आगरा
- **पाल एवं निगम (2000),** सामान्य, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के दृष्टिहीन विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन, भारतीय आधुनिक शिक्षा, एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली, वर्ष 18, अंक 3।
- **ज्ञानानी, टी0 एस0 एवं गुप्ता, मधु (1996).** शिक्षित पीढ़ी, जाति एवं यौन भिन्नता का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव, भारतीय आधुनिक शिक्षा, एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली, वर्ष 14, अंक 1
- **साहू, पी0के0 एवं मुछाल, एम0के0 (2000).** राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय के दूरस्थ शिक्षण अधिगम उपगमों की उपयुक्ता का अध्ययन, भारतीय आधुनिक शिक्षा, एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली, वर्ष 19 अंक 2।
- **वर्मा, सरोज एवं राजकुमार (1999),** 'विभिन्न विद्यालयी पाठ्य चर्चाओं में उपलब्धि और अध्ययन आदतों के बीच सहसम्बन्ध का अध्ययन, 'इण्डियन जर्नल ऑफ सायकोमेट्री इन एजुकेशन, वॉल्यूम–30, अंक–1, पृष्ठ–53–56
- **त्यागी, अंजू (1994),** 'स्वधारणा के सन्दर्भ में छात्र छात्राओं की शैक्षिक व व्यावसायिक आकांक्षाओं का अध्ययन,' एम0एड0 डिजर्टेशन, जोधपुर विश्वविद्यालय, राजस्थान में शिक्षा अनुसंधान वॉल्यूम–3